M.A II SEMESTER CC-4 01

शौरसेनी आगम साहित्य का इतिहास
इकाई (2) शौरसेनी टीका साहित्य

(1) बट्टकेर और उनका साहित्य का संक्षेप में प्रस्तुत करें।

Ans— आचार्य बट्टकेर के गण और गच्छ के सम्बन्ध में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। पर इतना सत्य है कि ये प्राचीन आचार्य है। श्री पं० जुगलकिशोर मुख्तार ने लिखा है कि "बट्टक का अर्थ वर्तक-प्रवर्तक है, इर गिरा वाणी सरस्वती को कहते है, जिसकी वाणी प्रवर्तिका हो-जनता को सदाचार एवं सन्मार्ग में लगाने वाली हो-उन्हें 'वट्टकेर' समझना चाहिए। दूसरे, बट्टकों-प्रवर्तकों में जो इरि-गिरि-प्रधान-प्रतिष्ठित हो अथवा ईरि समर्थ शक्तिशाली हो, उसे वट्टकेरी जानना चाहिए। तीसरे वट्ट नाम वर्तन-आचरण का है और ईरक प्रेरक तथा प्रवर्तक को कहते है, सदाचार में जो प्रवृत्ति करने वाला हो उसका नाम वट्टकेर है। इस प्रकार मुख्तार साहब ने बट्टकेर का अर्थ प्रवर्तक, प्रधान पद प्रतिष्ठ अथवा श्रेष्ठ आचारनिष्ठ किया है और इसे कुन्दकुन्दाचार्य का विशेषण बताया है। अतः इनके मत से कुन्दकुन्द ही वट्टकेर है। श्री पं० नाथुराम प्रेमी ने दक्षिण भारत में वेट्टगेरि या वेट्टकेरी नाम के ग्राम तथा स्थानों के पाये जाने से मूलाचार के कर्ता को वेट्टगेरि या वेट्टकेरी ग्राम का रहनेवाला बताया है जिस प्रकार कोण्डकुन्द के रहनेवाले होने से कुन्दकुन्द नाम प्रसिद्ध हुआ, उसी प्रकार वेट्टकेरि के रहनेवाले होने से मूलाचार के कर्ता भी वट्टकेर कहलाये।

Scanned with CamScanner

इसमे सन्देह नही कि वट्टकेर एक स्वतन्त्र आचार्य है और ये कुन्दकुन्दाचार्य से भिन्न है। विषय निरूपण कुन्दकुन्द के अनुसार होने पर भी भाषा की दृष्टि से मूलाचार मे कई भिन्नताऐं है। अतः मूलाचार कुन्दकुन्द की रचना नही है। वट्टकेर का समय अनुमानतः कुन्दकुन्द के पश्चात मानना उचित है। मूलाचार में मुनियों के आचार का निरूपण है। इसकी अनेक गाथाएँ आवश्यक नियुक्ति, पिण्डनियुक्ति, भत्तपइण्णा और मरण समाही आदि श्वेताम्बर ग्रन्थों में मिलती है। इस ग्रन्थ में 12 अधिकार और 1252 गाथाएँ है। पहले मूलगुण अधिकार में पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियों का निरोध, छह आवश्यक, केशलोच, अचेलत्व, क्षितिशयन, अदन्तधावन, स्थिति भोजन और एक भक्त भोजन इस प्रकार 28 मूल गुणों का निरूपण किया गया है। बृहत्प्रत्याख्यान संस्तव अधिकार में क्षपक को समस्त पापों का त्याग कर मृत्यु के समय दर्शनाराधना आदि चार आराधनाओं में स्थिर रहने और क्षुधादि परीषहों को जीतकर निष्कषाय होने का कथन किया है। संक्षेप में प्रत्याख्यानाधिकार में सिंह व्याघ्र आदि के द्वारा आकस्मिक मृत्यु उपस्थित होने पर कषाय और आहार का त्याग कर समताभाव का वर्णन है। अतः वट्टकेर में मुनियों के स्वरूप एवं अधिकार का विशेष वर्णन किया गया है। पिण्डशुद्धि अधिकार, शीलगुण अधिकार में अठारह हजार भेदों का निरूपण किया गया है।